Twitter Thread by Anshul Pandey





TODAY I WILL REMOVE ALL MISUNDERSTANDING & WRONG INFO ABOUT KRISHNA CHIRHARAN GOPI LEELA.

PLEASE BOOKMARK THIS THREAD AND REFUTE THOSE WHO ARE DOING PROPAGANDA.

I often see such kind of images floating around & with wrong info about Bhagwan Krishna.

So lets start with Gokul...



Some people are of the view that 'gopi chirharan leela' was vulgar and obscene. People forget that Krishna stayed at Gokul for merely eleven years. This leela possibly must have been done when he must be eight or nine. How could gestures of a child can be obscene.

Rishi's and saints have used such words in their scriptures for centuries but we in this modern world are taking their present day meaning without considering the inner nuances of those words.

Such words were used to make us aware about the pure bhakti which according to them was that there should be no barrier between Parmatma and devotee. Spiritualists believe that Krishna is ATMA and gopis are VRITI(

Once the cover of VRITI or attitude is destroyed that is Chirharan and finally when they surrender themselves to the Atma(Krishna) that is 'Raas'.

■ Credit - Krishna_subconcious & Yogfoundation

I have posted in Social media platforms too, Do follow me there too■

Instagram link■ https://t.co/XrhIzQUFAD

Facebook page link ■ https://t.co/4SDEfhVQNs

Just in case if you have not subscribed to my youtube channel, please do subscribe, I have already posted 4 Videos till now on different subjects. Do watch them and give your feedback in comments section.

https://t.co/W2jnWlziJC

SS from Bhagwat puran■

अ० २२]

गोपियाँ क्या चाहती थीं,

यह बात उनकी साधनासे

स्पष्ट है। वे चाहती थीं — श्रीकृष्णके

प्रत

उनकी सारी

霊

乳

्रेष और मन्त्र-जप करती थीं। अपने इस कार्यको सर्वथा उचित और प्रशस्त मानती थीं। एक वाक्यमें—उन्होंने ुर अकुल हो गयी थीं कि उन्हें माता-पिता तकका संकोच नहीं था। वे विधिपूर्वक देवीकी बालुकामयी मूर्ति बनाकर हिंत लीलाकी दृष्टिसे उनके समर्पणमें थोड़ी कमी थी। वे निरावरणरूपसे श्रीकृष्णके सामने नहीं जा रही थीं, ्राणी रहती थीं कि एकमात्र नन्दनन्दन ही हमारे प्राणोंके स्वामी हों। श्रीकृष्ण तो वस्तुत: उनके स्वामी थे ही। कृता कुल, परिवार, धर्म, संकोच और व्यक्तित्व भगवान्के चरणोंमें सर्वधा समर्पण कर दिया था। वे बही

्रापा के दिनमें वे प्रातःकाल ही यमुना-स्नानके लिये जातीं, उन्हें शरीरकी परवा नहीं थी। बहुत-सी कुमारी ाहें अर्थात भगवान्के विभूतिस्वरूप मार्गशीर्षमें उनकी साधना प्रारम्भ हो गयी। विलम्ब उनके लिये असहा शाला हो जाय। शरत्-कालमें उन्होंने श्रीकृष्णको वंशीध्वनिको चर्चा आपसमें की थी, हेमनके पहले ही किंद्रा किंद्रा कार्या कर्मा अपतानके विभागिस्तानके पहले ही

प्रात्सिमर्पण, श्रीकृष्णके साथ इस प्रकार घुल-मिल जाना कि उनका रोम-रोम, मन-प्राण, सम्पूर्ण आत्मा केवल

हैं गाँव और जातिवालोंका भय नहीं था। वे घरमें भी हविष्यानका ही भोजन करतीं, वे श्रीकृष्णके लिये इतनी शास्त्र साथ ही जातीं, उनमें ईर्ष्या-द्वेष नहीं था। वे ऊँचे स्वरसे श्रीकृष्णका नामकीर्तन करती हुई जातीं,

साथ यमुनातटपर पधारे थे। और यहीं काम भगवान् श्रीकृष्णने किया। इसीके लिये वे योगेश्वरोंके ईश्वर भगवान् अपने मित्र ग्वालबालोंके उनका आवरण भंग कर देनेकी आवश्यकता थी, थोड़ी झिझक थी; उनकी यही झिझक दूर करनेके लिये—उनकी साधना, उनका समर्पण पूर्ण करनेके उनका यह आवरणरूप चीर हर लेना जरूरी था

सम्पंग भी एक क्रिया है और उसका करनेवाला असमर्पित ही रह जाता है। ऐसी स्थितिमें अन्तरात्माका पूर्व समंग तब होता है जब भगवान् स्वयं आकर वह संकल्प स्वीकार करते हैं और संकल्प करनेवालेको भी बीकार करते हैं। यहीं जाकर समर्पण पूर्ण होता है। साधकका कर्तव्य है—पूर्ण समर्पणकी साधक अपनी शक्तिसे, अपने बल और संकल्पसे केवल अपने निश्चयसे पूर्ण समर्पण नहीं कर सकता। तैयारी। उसे व्र

ते भगवान् ही करते हैं। थी, तथापि भगवान्के द्वारा इसका मार्जन होना आवश्यक था। भगवान्ने गोपियोंसे इसका प्रायश्चित्त भी करवाया। गें लोग भगवान्के प्रेमके नामपर विधिका उल्लंघन करते हैं, उन्हें यह प्रसंग ध्यानसे पढ़ना चाहिये और भगवान् स्त्रता। परनु हृदयकी निष्कपटता, सचाई और सच्चा प्रेम विधिके अतिक्रमणको भी शिथिल कर देता है। क्लंबन नहीं करते, स्थापना ही करते हैं। विधिका अतिक्रमण करके कोई साधनाके मार्गमें अग्रसर नहीं गम्परागत सनातन मर्यादाका उल्लंघन करके नगन-स्नान करती थीं। यद्यपि उनकी यह क्रिया अज्ञानपूर्वक ही र्णापयाँ श्रीकृष्णको प्राप्त करनेके भगवान् श्रीकृष्ण यों तो लीलापुरुषोत्तम हैं; फिर भी जब अपनी लीला प्रकट करते हैं, तब मर्यादाका लिये जो साधना कर रही थीं, उसमें एक त्रुटि थी। वे शास्त्र-मर्यादा और

करती है उसकी उनकी लीला भी

प्राकट्य नहीं

कर पाते। शकि

्छ विचार करना

लिओंका रहस्य

कों है। गोपियोंने वेधी भक्तिका अनुष्ठान किया, उनका हृदय तो रागात्मिकाभक्तिसे विधिका कितना आदर करते हैं, यह देखना चाहिये। वैधी भक्तिका पर्यवसान रागात्मिका भक्तिमें है और रागात्मिका भक्ति पूर्ण समर्पणके रूपमें परिणत हो

निकुंजलीला और वगुह्यतम है। यह

ह्यदिनी नहीं

र श्रीगोपीजनोंको

र्ण समर्पण होना चाहिये। चीर-हरणके द्वारा वही कार्य सम्मन होता है। भे रख है, जिनसे निरावरण मिलनकी ही एकमात्र अभिलाषा है, उन्हीं निरावरण रसमय भगवान् श्रीकृष्णके भिने वे निरावरण भावसे न जा सकें—क्या यह उनकी साधनाकी अपूर्णता नहीं है? है, अवश्य है। और यह की, जिनकी प्राप्तिके लिये ही उनका यह महान् अनुष्ठान है, जिनके चरणोमें उन्होंने अपना सर्वस्व निछावर गोपियोंने जिनके लिये लोक-परलोक, स्वार्थ-परमार्थ, जाति-कुल, पुरजन-परिजन और गुरुजनोंकी परवा

हरणका प्रसंग है।

करनेके लिये वे

SS 2■

[30 47

निर्धाति कर दी। इससे भी स्पष्ट है कि भगवान् श्रीकृष्णमें किसी भी कामविकारकी कल्पना नहीं थी। जाने पुरुषका चित्त वस्त्रहीन स्त्रियोंको देखकर एक क्षणके लिये भी कब वशमें रह सकता है।

उन्होंने स्वीकार भी किया। उनकी प्रेममयी स्थिति मर्यादाके ऊपर थी, फिर भी उन्होंने भगवान्की इच्छासे मर्यात लीलाओंकी भौति उच्चतम मर्यादासे परिपूर्ण है। स्वीकार की । इस दृष्टिसे विचार करनेपर ऐसा जान पड़ता है कि भगवान्की यह चीरहरण-लीला भी भगवान्के पावन प्रसाद हैं, पल-पलपर भगवान्का स्मरण करानेवाले भगवान्के परम सुन्दर प्रतीक हैं। इसी हृष्टिमें अब ये वस्त्र वे वस्त्र नहीं हैं; वस्तुतः वे हैं भी नहीं—अब तो ये दूसरी वस्तु हो गये हैं। अब तो वे अपनी होकर गोपियाँ पुन: वे ही वस्त्र धारण करती हैं अथवा श्रीकृष्ण वे ही वस्त्र धारण कराते हैं; परनु गोपियोंक्रो स्थितिमें पहुँचकर बड़े-बड़े साधक प्राकृत पुरुषके समान आचरण करते हुए-से दीखते हैं। भगवान् श्रीकृष्णक्षे नहीं रख सकता। नरक नरक नहीं रहता, भगवान्का दर्शन होते रहनेके कारण वह वैकुण्ठ बन जाता है। इसे आनन्दरससे परिपूर्ण हो जाते हैं। तब बन्धनका भय नहीं रहता। कोई भी आवरण भगवान्के दर्शनसे बिक्क हो जाता है। उनके सम्पर्कमें जाकर माया शुद्ध विद्या बन जाती है। संसार और उसके समस्त कर्म अमृतम् भगवान्से सम्बन्ध और भगवान्का प्रसाद नहीं हो जाता। उनके द्वारा प्राप्त होनेपर तो यह बन्धन ही मुक्तिस्त्रक्ष इसका अनुमान कौन लगा सकता है। असलमें यह संसार तभीतक बाधक और विक्षेपजनक है, जबतक क्रु कंधेपर चढ़कर—उनका संस्पर्श पाकर कितनी अग्राकृत रसात्मक हो गर्यी, कितनी पवित्र—कृष्णमय हो गर्वी उठाया था और फिर उन्हें अपने उत्तम अंग कंधेपर रख लिया था। नीचेके शरीरमें पहननेकी साड़ियाँ भावानुके स्वरूप हो गये। इसका कारण क्या है? इसका कारण है भगवान्का सम्बन्ध। भगवान्ने अपने हाथसे उन वस्त्रोंक्से रहे थे विश्वेषका काम कर रहे थे—वही भगवान्की कृपा, प्रेम, सानिध्य और वरदान प्राप्त होनेके पण्डात 'रसार' एक बात बड़ी-विलक्षण है। भगवान्के सम्मुख जानेके पहले जो वस्त्र समर्पणकी पूर्णतमें बाधक है

भगवान् श्रीकृष्णकी लीलाओं के सम्बन्धमें केवल वे ही प्राचीन आर्षग्रन्थ प्रमाण हैं जिनमें उनकी लीलाका वर्णन हुआ है। उनमेंसे एक भी ऐसा ग्रन्थ नहीं है, जिसमें श्रीकृष्णकी भगवताका वर्णन न हो। श्रीकृष्ण 'सर्व भगवान् हैं' यही बात सर्वत्र मिलती है। जो श्रीकृष्णको भगवान् नहीं मानते, यह स्पष्ट है कि वे उन ग्रन्थोंको भी नहीं मानते। और जो उन ग्रन्थोंको ही प्रमाण नहीं मानते, वे उनमें वर्णित लीलाओंके आधारपर श्रीकृष्ण-शास्त्र-दृष्टिसे एक महान् अपराध है और उसके अनुकरणका तो सर्वथा ही निषेध है। मानवबुद्धि-बं स्थूलताओंसे ही परिवेध्ित है—केवल जडके सम्बन्धमें ही सोच सकती है, भगवान्की दिव्य चिन्मधी लीलांके प्रस्कान्यमें कोई कल्पना ही नहीं कर सकती। वह बुद्धि स्वयं ही अपना उपहास करती है, जो समस्त बुद्धियोंके प्रस्कात परे एहनेवाले परमात्माकी दिव्य लीलाको अपनी कसीटीपर कसती है।

हृदय और बुद्धिक सर्वथा विपरीत होनेपर भी यदि थोड़ी देरके लिये मान लें कि श्रीकृष्ण भगवान नहीं थे या उनकी यह लीला मानवी थी तो भी तर्क और युक्तिक सामने ऐसी कोई बात नहीं टिक पाती जो श्रीकृष्णं विपन्न में लाञ्छन हो। श्रीमद्भागवतका पारायण करनेवाले जानते हैं कि व्रजमें श्रीकृष्णने केवल ग्यारह वर्षने अवस्थातक ही निवास किया था। यदि रासलीलाका समय दसवाँ वर्ष मानें तो नवें वर्षमें ही चीरहरण लील अवस्थातक ही निवास किया था। यदि रासलीलाका समय दसवाँ वर्ष मानें तो नवें वर्षमें ही चीरहरण लील वर्षात्त करना भी नहीं हो सकती कि आठ-मी वर्षके बालकमें कामोत्तेजना हो सकती है। गाँवर्ष मैं वर्षात्त जाति में अवस्थात करना चाहें और उसके लिये साधना करें—यह कदापि सम्भव नहीं दीखता। उन कुमारी गोपियों के सम्मवे कल्पित वृत्ति थी, यह वर्तमान कल्पित मनोवृत्तिकी उड़ङना है। अगन्न में अपने कमी क्रीन की मनें कल्पित वृत्ति थी, यह वर्तमान कल्पित मनोवृत्तिकी उड़ङना है। अगन्न में